परस्परोपग्रहोजीवानाम्

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,
पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

सम्पूर्ण सृष्टि सहयोग से चल रही है। बिना सहयोग के कोई कार्य नहीं होता। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। जिस समाज में वह रहता है उसकी शक्ति का आधार सहयोग ही है। जिस कपड़े को हम पहनते हैं उसको तैयार होने में कितने लोगों का परिश्रम काम आता है। किसान कपास उत्पन्न करता है, कपास मण्डी में जाता है वहां से फैक्ट्री में जाकर धागे का रूप धारण करता है और अन्त में धागा वस्त्र के रूप में बदलता है। यह एक सहयोग की प्रक्रिया है। अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता। अर्थात् अकेला व्यक्ति कोई बड़ा कार्य नहीं कर सकता। सृष्टि निर्माण में भी पंचभूतों का योग होता है। किसी एक तत्व से कोई भी वस्तु नहीं बनती।

परस्परोपग्रहोजीवानाम् का अर्थ यह है कि सभी जीव एक–दूसरे का सहयोग करके अपने अस्तित्व की रक्षा करें। कोई किसी से बैर न करे, कोई किसी से रागद्वेष न करे। यह संसार सबका है, किसी एक व्यक्ति या प्राणी का नहीं। इसलिए इसका उपभोग सभी संयम पूर्वक करें। कोई किसी के जीवन में हस्तक्षेप न करे। प्रकृति मानव को सभी चीजे उपलब्ध करायी है। सूर्य का प्रकाश सभी लोगों के लिए है। वायु सभी के लिए है। सम्पूर्ण वायुमण्डल सभी के लिए है, आवश्यकता है इनके सदुपयोग की। यदि मानव त्यागपूर्वक इनका उपयोग करता है तो प्रकृति का खजाना कभी समाप्त होने वाला नहीं है। मानव एक सामाजिक प्राणी है स्वार्थ, परार्थ और परमार्थ की चेतना उसमें समाहित है। अहिंसा की वृत्ति भी उसके अंतर्गत है। अहिंसा का तात्पर्य है जीव हिंसा न करना। इसके साथ ही साथ प्राणियों के साथ मैत्री, मुदिता, सहिष्णुता, समता आदि भी अहिंसा के ही प्रर्याय है। सादगी का भी अपना एक दर्शन है, इसे हम आत्मशांति का दर्शन कह सकते है।

परोपकार करना परस्परोपग्रह है। रामचरित मानस में परोपकार के समान किसी भी धर्म को नहीं बतलाया गया है। हम सदैव यही कामना करते हैं कि हे भगवन्! हमें ऐसी शक्ति प्रदान करें जिससे दूसरों का कल्याण कर सकें। दूसरों के प्रति अच्छी भावना रखने से स्वयं का भी विकास होता है। नकारात्मक चिंतन शरीर पर दुष्प्रभाव डालता है। इससे दुसरों का नुकसान हो या न हो किन्तु अपना नुकसान पहले हो जाता है। इससे मन में अशान्ति और तनाव बना रहता है। बुरे भाव से कर्म का बंधन भी होता है। कर्म का सिद्धान्त बहुत ही प्रबल है। इसका परिणाम जीव को अवश्य भोगना पड़ता है। भाव बंधन बड़ा प्रबल होता है। प्रकृति का नियम है कि जो जैसा कर्म करता है, उसे वैसा परिणाम भी भुगतना पड़ता है। आम का बीज आम का फल देता है और बबूल का बीज काटों को ही प्रदान करता है। अच्छा परिणाम प्राप्त करने के लिए अच्छा कार्य करना पड़ता है। जो स्वयं को हितकर हो वही आचरण दूसरों के साथ करना चाहिए।

भारतीय संस्कृति में परस्परोपग्रह की महिमा का गुणगान हुआ है। परस्परोपग्रह का तात्पर्य है निष्काम भाव से दूसरों का उपकार करना। स्वार्थ और परार्थ से यह विश्व बना है। स्वार्थ का मतलब होता है सबकुछ अपने लिए करना, अपने परिवार के लिए करना, अपने सगे–संबंधियों के लिए करना। स्वार्थ में अपना हितचिंतन प्रदान होता है। परार्थ ठीक इसके विपरीत है। परार्थ ही परस्परोपग्रह है। परस्परोपग्रह में हम अपना हित छोड़कर दूसरों के लिए कार्य करते है। शास्त्रों में परोपकार की महिमा का वर्णन खुब किया गया है। कहा गया है हाथ की शोभा दान देने से है न कि कंगन पहनने से। वाणी की शोभा हितवचन बोलने में है न कि बुरा वचन। बुद्धि का कार्य रचनात्मक विश्व का निर्माण करने में है न कि विध्वंसात्मक कार्य करने में। मानव का कार्य स्वार्थ और परार्थ दोनों प्रकार का होता है। किन्तु प्रकृति परोपकार ही करती है और अपना सबकुछ मानव के लिए न्यौछावर कर देती है। प्रकृति हमें वसुधैव कुटुम्बकम् की शिक्षा देती है।

नदियां परोपकार के लिए ही बहती है। उसका स्वादपूर्ण और मीठा जल मानव, जीव–जन्तु, पशु–पक्षी सभी पीकर अपने जीवन का निर्वाह करते है। वृक्षों में लगा हुआ फल सभी प्राणी

अपने इच्छानुसार खाते है। वृक्ष स्वयं फल नहीं खाता, नदियां स्वयं जल नहीं पीती, बल्कि परोपकार के लिए ही प्रकृति कार्य करती है। पृथ्वी के गर्भ में समाया हुआ खनिज पदार्थ किसके लिए है? निश्चित ही यह मनुष्यों के लिए है। अतः इनका उपयोग मानव को सावधानी पूर्वक करना चाहिए और अपनी आवश्यकतानुसार ही इन्हें खर्च करना चाहिए। किन्तु आज मानव की प्रवृत्ति ऐसी हो गयी है कि वह अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए अंधाधुंध इसका दोहन कर रहा है। खनिज पदार्थ तो सीमित है। अगर इसी प्रकार से इसका दोहन होता रहा तो निश्चित ही एक दिन पृथ्वी का खजाना खाली हो जायेगा और वह इसकी पूर्ति कैसे करेगी। आत्मतुला का सिद्धान्त परस्परोपग्रहोजीवानाम् का संदेश देता है। हम देखते है कि गर्मी के दिनों में जगह–जगह पशु–पक्षियों को पीने के लिए जल की व्यवस्था समाज की तरफ से की जाती है, जिससे लोग अपनी प्यास बुझा सके। सार्वजनिक स्थानों पर जल व्यवस्था करके लोग परोपकार का ही उदाहरण प्रस्तुत करते है। किसी भी प्राणी की हिंसा नहीं करनी चाहिए। सभी जीव समान है यही परस्परोपग्रहोजीवानाम् का संदेश है।